पुस्तकालयों की भूमिका का महत्व

प्राथमिक विद्यालयों में पुस्तकालयों के प्रयोग, पढ़ने की घंटी आदि की बात काफी होती है। इनके महत्व को हमने सीखने-सिखाने में देखा भी है। विशेषकर कोविड के बाद विद्यालय खुलने पर बच्चों के लर्निंग लॉस के सन्दर्भ में। उच्च प्राथमिक विद्यालयों में भी पुस्तकालयों की भूमिका का महत्व उतना ही बल्कि कई मायनों में बढ़ ही जाता है।

– कमलेश चन्द्र जोशी

फोटो– पुरुषोत्तम

प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के एक समूह के साथ बात हो रही थी कि हम लोग तो अपने विद्यालयों में बच्चों को किताबें पढ़ने को देते रहे हैं। कुछ बच्चे किताबें घर भी ले जाते हैं वहां उनके कुछ घर के सदस्य भी किताबें पढ़ लेते हैं पर जब ये बच्चे जूनियर विद्यालयों में जाते हैं तो उन्हें पुस्तकालय की कोई सुविधा नहीं मिल पाती। इस कारण उनका किताबों से जो रिश्ता विगत वर्षों में जो बना होता है वह छूट जाता है। उनकी यह बात ठीक लग रही थी वैसे भी पुस्तकालय की किताबें तो हर स्तर पर उपलब्ध होनी चाहिए और बच्चों की पहुंच में होनी चाहिए। इस संदर्भ में शिक्षकों से बातचीत भी करनी चाहिए।

दूसरी तरफ अगर हम जूनियर विद्यालयों की वर्तमान परिस्थिति पर गौर करें तो वहां विद्यालयों में कुछ पुस्तकें तो दिखाई पड़ती हैं पर उनमें से थोड़ी बहुत किताबों को छोड़कर वे इस स्तर के बच्चों के बहुत मतलब की नहीं कही जा सकती। इसके साथ शिक्षकों के कई व्यवस्थागत समस्याओं के चलते पुस्तकालय संचालित करना मुश्किल रहा है और उनके साथ इस विषय पर संवाद भी नहीं किया गया है। इन कारणों से स्कूलों में पुस्तकालय को सक्रिय रूप से संचालित करने का काम पीछे रह गया है।

बच्चों के लिए पुस्तकालय के महत्व की अनुशंसा विभिन्न नीतिगत दस्तावेजों– आर.टी.ई. का दस्तावेज हो, राष्ट्रीय पाठयचर्या की रूपरेखा– 2005 आदि में की गई। राष्ट्रीय पाठयचर्या दस्तावेज में कहा गया है– 'पुस्तकालय को अधिगम, आनंद व तन्मयता के साधन' के रूप में इस्तेमाल करना चाहिए। इसमें आगे यह भी लिखा है– 'स्कूल पुस्तकालय की संकल्पना ऐसे बौद्धिक स्थल के रूप में की जानी चाहिए जहां शिक्षक, विद्यार्थी और निकटस्थ समुदाय के लोग ज्ञान के गहरे अर्थों और कल्पनशीलता की तलाश में आएं।' इसके साथ ही भाषा शिक्षण से जुड़े दस्तावेजों में भी बच्चों को पढ़ने का आनंद लेने, साहित्यिक रुझान बनाने, उत्साही पाठक बनाने के उद्देश्य को अच्छे से रेखांकित किया गया है और इस पर काम करने की आवश्यकता गहराई से महसूस होती है। शिक्षकों के बीच काम करते हुए ऐसा लगता है कि अभी जमीनी स्तर पर पुस्तकालय के महत्व को अच्छे से नहीं पहचाना गया है। प्राथमिक स्तर पर तो कहीं–कहीं

रीडिंग कॉर्नर के तहत ये प्रयास दिखाई दे जाते हैं परंतु आगे की कक्षाओं में किताबें तो दिख जाती हैं लेकिन बच्चों के साथ इनका लेन–देन, उपयोग बहुत अधिक दिखाई नहीं पड़ता।

आगे हम इस आलेख में उच्च प्राथमिक स्तर पुस्तकालय के लिए किताबों के चयन और उसके उपयोग पर कुछ चर्चा करेंगे। सर्वप्रथम इस बात पर गौर किया जाना चाहिए हमारे देश में किशोर बच्चों की आवश्यकताओं को देखकर सुरुचिपूर्ण सामग्री देखने को बहुत कम मिल पाती है। हाल के वर्षों में जरूर इस दिशा में प्रयास हुए हैं और कुछ किताबें प्रकाशित हुई हैं। इन प्रकाशनों में नेशनल बुक ट्रस्ट, भारत ज्ञान विज्ञान समिति, स्कालस्टिक, एकलव्य, तूलिका व इकतारा प्रकाशन का नाम लिया जा सकता है। इन प्रकाशकों ने अच्छी किताबें प्रकाशित की हैं जिनका बच्चों के साथ उपयोग किया जा सकता है। इसके अलावा चकमक व साइकिल जैसी पत्रिकाएं भी प्रकाशित होती हैं जिनका एक्सपोजर इन बच्चों को दिया जाना चाहिए।

शिक्षक भी किताबों को पढ़ने के प्रति अपना रुझान विकसित करें तभी उनमें किताबों पर दृष्टि बनेगी और वे बच्चों के साथ संवाद स्थापित कर पाएंगे।

बच्चों में किताबों के प्रति रुझान बनाने में शिक्षक व पुस्तकालयाध्यक्ष की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है कि वह बच्चों को किताबों के बारे में बताए, उन्हें किताबें पढ़ने के लिए दे, किताबों पर बच्चों के साथ बात करे, किताबों पर कुछ गतिविधियां आयोजित करे। इस तरह के प्रयास विद्यालय स्तर पर किए जाने चाहिए। इन्हें एक विद्यालय में किए गए कार्य के उदाहरण से हम समझ सकते हैं। इस विद्यालय में पुस्तकालय के कालांश को संचालित करने में शिक्षकों के साथ बातचीत में यह स्पष्टता लाई गई थी कि बच्चों के लिए पुस्तकालय संचालन में यह प्रयास होना चाहिए कि बच्चों को विविध तरह की सामग्री को द्वारा उन्हें पढ़ने का एक्सपोजर दिया जाए जिससे उनमें कुछ पढ़ने का रुझान विकसित हो सके। यह सामग्री केवल कविता–कहानी पढ़ने तक ही सीमित न हो। बच्चे अन्य विषयों से जुड़ी पुस्तकें पढ़ें और किताबें अपने घर भी ले जाएं। इस प्रक्रिया में उन्हें नियमित रूप से पढ़ने के मौके दिए गए और उनके साथ समय–समय पर इस

किताबों पर चर्चा के लिए अच्छे प्रश्न बनाना जरूरी

अकसर स्कूलों में भ्रमण के दौरान देखने को मिलता है कि स्कूलों में बाल पुस्तकें उपलब्ध होती हैं और बच्चों को पढ़ने के लिए भी कभी–कभार मिल जाती हैं। परंतु बच्चों को उत्साही पाठक बनाने व पुस्तकालय के दीर्घकालिक लक्ष्यों को हासिल करने की दृष्टि से पुस्तकों को पढ़ने के साथ कुछ और गतिविधियों की भी दरकार रहती है। जैसे कि बच्चों को किताबें पढ़कर सुनाना और किताबों पर चर्चा करना। ये दोनों गतिविधियां किताबों से एक अंतरंग जुड़ाव बनाने के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं इसके माध्यम से बच्चे किताबों से अपना जुड़ाव बना पाते हैं। उसमें उन्हें अपने अनुभव, विचार, सोच, कल्पना को जोड़ने का मौका मिलता है। वे अपने अनुभवों, विचारों को लिख भी सकते हैं। इससे जुड़े चित्र भी बना सकते हैं।

इस प्रकार बच्चों के सामने किताबों की आंतरिक दुनिया खुलती है। किताबों पर चर्चा के लिए अच्छे प्रश्नों का होना बहुत जरूरी है। इन्हें सोच–समझ के साथ बनाना जरूरी है। यह इस बात पर भी निर्भर करता है कि एक शिक्षक ने किताब को कितनी गहराई से महसूस किया है और उसका खुद का किताबों को पढ़ने का नज़रिया क्या रहा है? इसमें यह बात जोड़ना भी आवश्यक है यह नज़रिया धीरे–धीरे ही विकसित होता है। बच्चों के साथ किताबों पर चर्चा का महत्व इस मायने में है कि बच्चे किताब की विषयवस्तु से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर थोड़ा गहराई से सोच–विचार सकें। किताब के विचारों व अनुभवों को अपने व स्थानीय परिवेश से जोड़कर देख सकें। विषयवस्तु पर खुद से नई तरह से कल्पना कर सकें, एक किताब को दूसरी किताब से भी जोड़कर देख सके। इस प्रकार की बातचीत बच्चों के किताब पढ़ने को समृद्ध बना सकती है और उनमें पढ़ने का उत्साह

विकसित कर सकती है। इस नज़रिए को ध्यान में रखकर किताबों का बच्चों के साथ उपयोग करना चाहिए।

बच्चों के साथ किसी किताब पर चर्चा से पहले यह जरूरी है उस किताब की विषयवस्तु व खासियत के बारे में अच्छी तरह से पता हो। किताब से उभरने वाले नज़रिए के बारे में पता हो। हममें यह भी स्पष्टता हो उस पर हम क्या–क्या बात करेंगे? किन पहलुओं को उभारेंगे? चर्चा के लिए प्रश्न भी खुले हुए और सोचने वाले होने चाहिए। आमतौर पर हमारी बातचीत के प्रश्न भी जानकारीपरक ही होते हैं। हमारी पहले से किताब पर बातचीत की कोई तैयारी भी नहीं होती। इस कारण चर्चा भी सीमित दायरे में हो पाती है और केवल सवाल–जवाब तक बात सीमित रह जाती है। बच्चों के साथ यह चर्चा बच्चों को किताब सुनाकर या बच्चों द्वारा पढ़ी हुई किताब दोनों तरीकों से की जा सकती है।

इस आलेख में हम माइक थेलर द्वारा लिखित व तेजी ग्रोवर द्वारा अनूदित बच्चों की छोटी सी किताब 'छुटकी उल्ली' पर आधारित पुस्तक चर्चा के बारे में बात करेंगे। इस किताब को एकलव्य, भोपाल ने प्रकाशित किया है। पहली बात तो यह उभरती है इस किताब को हम चर्चा के लिए क्यों चुन रहे हैं? किताब की खासियत यह है इस किताब के मुख्य चरित्र छुटकी उल्ली और उसकी माँ है। छुटकी उल्ली प्रश्न पूछने वाली, दुनिया को समझने के लिए उत्सुक उल्ली है जो अपनी माँ से बार–बार सवाल पूछती है। इसके साथ इसमें यह भी गौर करने वाली बात है कि हमारे समाज में उल्लू को बेवकूफ पक्षी के रूप में समझ जाता है और इसका संबोधन भी आमतौर बच्चों पर टैग लगाने के भी लिए करते हैं। ऐसा ही गधे को भी समझा जाता है। इसके साथ ही आमतौर पर बच्चियों से यह अपेक्षा होती है कि वे ज्यादा प्रश्न न पूछा करें जो बताया जा रहे उसे ही मान लिया करें। लड़कियों का प्रश्न पूछना अच्छी प्रवृत्ति नहीं मानी जाती। इसके साथ किताब में यह भी गौर करने लायक है कि छुटकी उल्ली की मम्मी भी उसके किसी भी प्रश्न के सीधे उत्तर नहीं देती और उसे खुद से उत्तर तलाशने के लिए प्रोत्साहित करती रहती है। कहानी के अंत में मां और बच्ची के प्यार को दिखाया गया है जिसका कोई मूल्य नहीं है।

हालांकि किताब के चित्र सादे हैं लेकिन बच्चों को सोचने का मौका देते हैं। इस प्रकार यह किताब बच्चों के लिए एक अच्छी किताब का उदाहरण भी प्रस्तुत करती है। अब प्रश्न उठता है कि अगर इस किताब को बच्चों को सुनाकर या उन्हें पढ़ने का मौका हमें इस किताब पर बच्चों से बातचीत का मौका मिले तो उस पर हम उनसे क्या बात करेंगे ? इस पर हमें सोचना होगा और कुछ प्रश्न सोचने होंगे जो किताब को बच्चों के लिए और गहरा अर्थ दे पाएं। इस बात को समझते हुए हमने कुछ प्रश्न बनाने का प्रयास किया है जिन पर बच्चों के साथ बातचीत की जा सकती है–

- कहानी में कौन–कौन है
- कहानी आपको कैसी लगी? कहां–कहां पर अच्छी लगी?
- ऐसी कोई कहानी/किताब आपने पहले पढ़ी है? उसका नाम बताओ।
- छुटकी उल्ली क्या करती है? किस तरह की पक्षी है?
- छुटकी उल्ली और क्या सवाल पूछ सकती है?
- छुटकी की अम्मी कैसी हैं? वे क्या करती हैं?
- छुटकी की अम्मी सवालों के सीधे जवाब क्यों नहीं बता देतीं ?
- तुम में से किस–किस के मन में सवाल आते हैं ?

- तुम्हारे मन में क्या–क्या सवाल आते हैं ? बताओ।
- सवालों के उत्तर पता करने के लिए हमें क्या करना पड़ता है?
- सवाल पूछने से क्या होता है?
- कहानी के अंत में क्या हुआ?
- इस कहानी को पढ़कर हमें क्या पता चलता है?
- इस कहानी का हम कोई नया नाम रख सकते हैं? नाम बताओ।
- इस कहानी के आधार पर अपने मन से कोई चित्र बनाओ।
- छुटकी उल्ली और उसकी अम्मी को लेकर क्या तुम कोई दूसरी कहानी बना सकते हो ? बनाओ।
- छुटकी उल्ली और उसकी अम्मी की जगह किसी और पक्षी / पशु को रखकर नई कहानी बनाओ।

अगर हम उक्त प्रश्नों पर गौर करें तो इसमें कुछ प्रश्न तो सीधे किताब की विषयवस्तु से जुड़े हुए हैं, कुछ बच्चों के लिए सोचने वाले सवाल हैं जो बच्चों के परिवेश से या उनके अनुभवों से जुड़े हुए हैं। इन प्रश्नों पर बातचीत से सामाजिक जागरूकता का मूल्य उभरता है। इन प्रश्नों पर बच्चों के अलग–अलग उत्तर हो सकते हैं। इस पर उनके साथ अच्छी चर्चा हो सकती है। इसके अलावा बच्चों को चित्र बनाने व लिखने का मौका देने वाले सवाल भी रखे गए हैं। इनसे बच्चों को अभिव्यक्ति के विकास का मौका मिलता है।

इममें हमारे लिए यह भी सुविधा है कि अपने समय को देखते हुए हम कुछ सवाल चुन लें या सभी सवालों पर बात कर लें। इसके लिए हमारा उद्देश्य स्पष्ट होना चाहिए। इस प्रकार अगर हम बच्चों से किताबों पर चर्चा करेंगे तो हम आगे उन्हें हम उत्साही व जागरूक पाठक बना पाएंगे। इसके साथ ही अपने स्कूल के पुस्तकालय को जीवंत भी बना पाएंगे और पुस्तकालय के वृहद लक्ष्यों को हासिल कर पाएंगे।

– कमलेश जोशी

सामग्री पर चर्चा भी आयोजित की गई। बच्चों के साथ चर्चा की गई सामग्री में 'चकमक' पत्रिका में प्रकाशित कहानियां 'मुन्ना बुनाईवाले', 'साइमन और सैंडी' या 'साइकिल' पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं' घुड़सवार', 'शेर और कव्य्या' , 'गोदाम 'आदि कहानियां सुनाई गईं। कुछ किताबें जैसे– 'क्यूँ क्यूँ लड़की', 'इतवा मुंडा ने लड़ाई जीती' भी सुनाई गई। इसी तरह 'सप्पू के दोस्त', 'पूड़ियों की गठरी', 'इकतारा बोले' आदि के कुछ पाठ पढ़कर सुनाए गए। इन पर उनके साथ चर्चा भी की गई। 'घुड़सवार' कहानी बच्चों को बहुत अच्छी लगी पर उसका अंत उन्हें अच्छा नहीं लगा। इन रचनाओं की विषयवस्तु के साथ इसके प्रस्तुतिकरण व भाषा पर उनका ध्यान दिलाया गया। कविताओं से परिचित कराने के लिए विनोद कुमार शुक्ल, राजेश जोशी, नवीन सागर, सुशील शुक्ल की कविताएं पढ़कर सुनाई गईं और उन पर बात भी की गई। बच्चों के साथ उपयोग की गई उक्त सामग्री इन बच्चों के मनोभावों, सोच व कल्पनाशीलता से जुड़ी हुई थी और बच्चे इससे अच्छा जुड़ाव महसूस कर रहे थे। इस प्रक्रिया पर शिक्षकों से भी चर्चा हुई कि इस तरह के प्रयास हमें बच्चों के साथ लगातार करने होंगे तभी हम बच्चों में कुछ रुचि बनने की उम्मीद की जा सकती है। इस पर लगे रहना होगा। इसके साथ हमें यह समझना होगा कि ये प्रक्रियाएं उनकी भाषा व अन्य विषयों की समझ को भी मजबूत करेंगी। बच्चों का पुस्तकों में रुझान बनाने के लिए हमें भी किताबों में रुचि विकसित करनी होगी तभी हम बच्चों के साथ किताबों का उपयोग कर पाएंगे।

उक्त उदाहरण से यह स्पष्ट होने में भी मदद मिली होगी कि विद्यालयों में केवल किताबें आ जाने से काम नहीं चलेगा। इसके लिए शिक्षकों को अपने स्तर पर भी प्रयास करने होंगे। इस प्रयास में उनका अभिमुखीकरण किया जा सकता है। अभिमुखीकरण के अलावा उनके साथ नियमित संवाद की जरूरत पड़ेगी। इसके अंतर्गत सबसे महत्व की बात यह होगी कि शिक्षक भी किताबों को पढ़ने के प्रति अपना रुझान विकसित करें तभी उनमें किताबों पर दृष्टि बनेगी और वे बच्चों के साथ संवाद स्थापित कर पाएंगे। अगर इस तरह संवाद बनाएंगे तो वे बच्चों को उत्साही पाठक के रूप में विकसित करेंगे। इससे वे हिन्दी पट्टी में अच्छे पाठक तैयार करने में मदद करेंगे।

(लेखक अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन रुद्रपुर, उत्तराखण्ड से जुड़े हैं)